दीवाली दुसहरा
अते
लोहड़ी

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

गुरमुख दीपक सदा जगदा, जुग चौकड़ी रहे रुशनाईआ। गुर सतिगुर पूरे सोहणा लग्गदा, दो जहानां वेख वेख खुशी मनाईआ। साढे तिन्न हत्थ मन्दर अंदर रक्खदा, घर विच्च लए टिकाईआ। लेख चुका के माचस अग्ग दा, जोती जोत करे रुशनाईआ। नित नवित्त पेख पेख कदे ना रज्जदा, आसा तृस्ना होर वधाईआ। दे के लहणा हकीकत हक़ दा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरन नूर करे रुशनाईआ।

गुरमुख दीपक सदा उजाला, उजल नज़री आईआ। दो जहान होवे ना काला, कूड़ा रंग ना कोई वखाईआ। काया अंदर सच्ची धर्मसाला, सच दवारे सोभा पाईआ। वेखणहारा हरि गोपाला, श्री भगवान खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

गुरमुख दीपक धुर दा चानण, सूरज चन्द किरन शरमाईआ। सच दवारे सतिगुर आवे बालण, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चमके दामनी नालों तेज दामन, दमक वक्खरी इक्क प्रगटाईआ। जिस नूं लभ्भदे शूद्र वैश शत्तरी ब्रह्मण, पार किनारे ध्यान लगाईआ। सो देवणहारा सच निशानन, निशाना इक्को इक्क वखाईआ। सन्त सुहेले विरले जानण,

जिन्नां देवे मात वडयाईआ। गुरमुख सच्चे लोकमात मानण, मनसा माण मिटाईआ। साचा दीपक साचे गृह पहचानण, साचे घर वेख वखाईआ। हनवन्त कहे मेरा नूर सच्चा रामन, जोती धार दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाईआ।

गुरमुख दीआ जगे बिन बाती, सद सतिगुर आप जगाईआ। करे प्रकाश अन्धेरी राती, जुग चौकड़ी सच रुशनाईआ। ऊँचो ऊँच निकले अगम्मी लाटी, ज्वाला अक्ख ना कोई उठाईआ। वेखणहारा कमलापाती, पतिपरमेशवर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

गुरमुख दीपक सच निराला, निरगुण आप प्रगटाईआ। जिस दी वक्खरी अगम्मी माला, दर घर करे रुशनाईआ। जिथ्थे वेखणहारा दीन दयाला, दूजा नजर कोई ना पाईआ। उह मन्दर सोहणा सच धर्मशाला, दवारा इक्को इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीपक दए वडयाईआ।

गुरमुख दीपक सदा जगदा, जुग जुग प्रगटाइंदा। बिन अक्खां सोहणा लग्गदा, बिन नेत्र रंग चढ़ाइंदा। बिन फटी सहारे सजदा, आसरा अवर ना कोई तकाइंदा। मसती खुमारी अंदर दगदा, रूप अनूप रंग वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीपक इक्क रुशनाइंदा।

गुरमुख दीपक सभ तों सोहणा, गुर अवतार गए जस गाईआ। जिस नूं तक्के इक्को तीजा नेत्र लोइणा, लोचण दोए नजर ना आईआ। सच दवारे आप टिकौणा, हरि जू धुर दी वंड वंडाईआ। बिन तेल बाती डगमगौणा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। हवा झकोले झक्खड़ ना किसे बुझाउँणा, सवाणी फूक ना कोई लगाईआ। बिन सतिगुर आपणी जोत ना किसे मिलौणा, नूर नूर विच्च ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

गुरमुख दीपक सभ तों प्यारा, मित्रां विच्चों मित्र नज़री आईआ। जिस दा वक्खरा अजीब नज़ारा, बिनां भगतां समझ किसे ना पाईआ। नज़री आए महल्ल अट्टल उच्च मनारा, हरि मन्दर दए वडयाईआ। जुग चौकड़ी दस्स दे गए गुरू अवतारा, पैगम्बर मात जणाईआ। बिन सतिगुर किरपा दीपक होए ना कोई उजिआरा, लक्ख चुरासी अन्ध अन्धेर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद वेखणहार वडयाईआ।

गुरमुख दीपक गहर गम्भीर, गुर करता आप जणाईआ। घर टिकाया तत्त सरीर, साढे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। जिस दीपक नूं तक्क के भगत कबीर, नेत्र नीर वहाईआ। एह मन्दर रक्खया उस अखीर, धुर दी चोटी दिता टिकाईआ। जिथ्थे शरअ दे टुट्टे जंज़ीर, मज़्हब दीन ना कोई वखाईआ। अक्खरां वाली ना कोई लकीर, हरफ़ां वाली ना कोई

पढ़ाईआ । नक़शिआं वाली ना कोई तस्वीर, तसबी हत्थ ना कोई लटकाईआ। ओथे इक्को इक्क जोत सरूपी धुर दा पीर, पतिपरमेशवर डेरा लाईआ। जिसदा खेल बेनज़ीर, जगत नज़र ना कोई दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नूर रुशनाईआ।

गुरमुख दीपक नूरो नूर, नुराना इक्क अखवाइंदा। जो जलवा तक्कया मूसे उत्ते कोहतूर, सो गुरमुख अंदर हरि प्रगटाइंदा। हरिजन एसे कारन मशहूर, भगत भगवान घर घर वेख वखाइंदा। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, दूर दुराडा घर साचे चल के आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

गुरमुख दीपक घर मन्दर टिकिआ, टिक टिकी इक्क लगाईआ। जिस मंज़ल ते मिलदी साची सिख्या, आत्म ब्रह्म होवे पढ़ाईआ। जिस दवारे इक्को दिसिआ, दहि दिशा दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर नूर करे रुशनाईआ।

गुरमुख दीपक नूर नूराना, दो जहानां करे रुशनाईआ। साचा मन्दर सोहे मकाना, बंक दवार मिले वडयाईआ। करे प्रकाश कोटन भाना, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। मेहरवान हो श्री भगवाना, वेखे चाईं चाईंआ। कलिजुग अन्तम जन भगतां दे के दाना, दाते आपणी दया कमाईआ। अन्तर आत्म दिवस रैण अठ्ठे पहर निरगुण नूर दीपक जोत जगे महाना, महांबली दिता टिकाईआ। वेखणहार श्री भगवाना, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। महाराज शेर सिँघ नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे घर परवाना, दीपक दीआ घर घर दिता टिकाईआ । अठ्ठे पहर वेखे मार ध्याना, दिवस रैण घड़ी पल वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख दीवाली दीपक कर प्रधाना, सच मन्दर दिता टिकाईआ। (१६ कत्तक २०२१ बिक्रमी दीवाली दिवस)

* * * * *
* * * * *

भगत दीवाली दीपक बिलोए, बाल बाल रुशनाईआ। सच समग्री इक्को होइ, सति सति इक्को वडयाईआ। सच प्रकाश सदा त्रैलोए, लोक अलोक सहाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर मोहे, मुहब्बत बेपरवाहीआ। दोए एक रूप तन अन्तर होए, दूजा नज़र कोई ना आईआ । जन भगत दीवाली जाणे कोई, जुग चौकड़ी सार कोई ना आईआ। राम राम नूं देवे ढोए, प्रनाम विच्च सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीवाली इक्क वखाईआ।

भगत दीवाली कहे मेरा जगदा दीप, दीपक करे रुशनाईआ। मेरी ओस दे नाल प्रीत, जो प्रीतम पतिपरमेशवर रिहा वखाईआ। मैं वेख्या लघँ के सच दहिलीज, मंज़ल पन्ध मुकाईआ । जिस दी जुग चौकड़ी रक्खी रीझ, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। सो मिल्या साहिब हबीब, तबीब नूर खुदाईआ। जलवा तक्क अज़ीब, हैरानी विच्च तकाईआ। जिस दा लेखा शाह ग़रीब, गैरां करे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीवाली इक्क वखाईआ।

दीवाली कहे मैं भगतां जोगी, जुग जुग राह तकाईआ। जिन्हां नूं साहिब सच्चे दी आ गई सोझी, गृह मन्दर होई रुशनाईआ। उन्हां दी पूजा करन लोकी, परलोक वज्जी वधाईआ । खेल वेख के ठाकर मौजी, मजलस इक्को घर सुहाईआ। जिस दीवाली नूं वेख के गए वेदी सोढ़ी, नानक गोबिन्द अक्ख खुल्हाईआ। सो दीपक लो प्रकाश देवे उहदी, जिस दी जोत ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीवाली दए दृढ़ाईआ ।

भगत दीवाली कहे मैं सदा रहां दिन रात, दिवसां वाली ना वंड वंडाईआ। अठ्ठे पहर रक्खां प्रकाश, प्रेम नूर रुशनाईआ। दीपक विच्चों दीपक दी देवां लाट, ललाट करां रुशनाईआ। जन भगतां दी मेटां वाट, अद्धवाटा पन्ध मुकाईआ। मंज़ल वखा के घाट, घाटे पूर कराईआ। आत्म दी दस्स के जात, परमात्म दिआं मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

दीवाली कहे मैं आई विच्च संसार, दीवे बत्ती सभ दे गुल कराईआ। मेरे शहनशाह दा शहनशाही विवहार, साची शमां ना कोई जगाईआ। खेड़े उजड़े विच्च संसार, बेड़े कूड़े दिआं डुबाईआ। भगतां करां प्यार, प्रेमीआं लिआ उठाईआ। जिन्हां "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान" बोलिआ जैकार, उन्हां देवां माण वडयाईआ । दीआ बाती कमलापाती बाल के अगम्म अपार, तेल बत्ती बिना दित्ता टिकाईआ। सो जगदा रहे सद भगतां वाली प्रभात, नूर इक्को इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सच करे रुशनाईआ।

भगत दीवाली कहे मैनूं लोड़ नहीं दीआ बत्ती, तेल वाली ना आस रखवाईआ। मैं भगतां नूं मिलाउणा धुर दा कमलापती, जिस नूं मिल्या जोत ना कोई बुझाईआ। एहो खेल लग्गे हच्छी, अच्छी तरां दृढ़ाईआ। जन भगतां करां पक्की, हुक्म दस्सां बेपरवाहीआ। जन भगतो सच दीवाली वेखो आपणी उस अक्खीं, जो अक्खीआं दे पिच्छे अक्खी दित्ती लगाईआ। जिथ्थे अन्धेर रहे ना रती, दिवस रैण होए रुशनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दे के इक्क मती, मतलब गुरमुखां हल कराईआ।

दीवाली जगत कहे मैं चुक्क के वेख्या परदा, नैण अक्ख नाल बदलाईआ। लेखा

जाणयां घर घर दा, वेखी सर्ब लोकाईआ। दीपक तेल बाती नाल तकिआ बलदा, थोड़े समें लई रुशनाईआ। जगत जहान दीपक जलदा, रैण सबाई तक्की हाल दुहाईआ। जिन्नां उत्ते भाणा वरतना कलिजुग कल दा, कालख टिक्के ना कोई मिटाईआ। लेखा मिलणा कूड़े फल दा, कर्मां दी होए सज़ाईआ। शेर बुक्कणा दो जहान वडी झल्ल दा, झलक आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दीवाली दए बुझाईआ।

जगत दीवाली कहे बहुते दीवे होए गुल, रोशन ना कोई कराईआ। माटी दा पिआ ना कोई मुल्ल, कीमत ना कोई चुकाईआ। सच ना तुलिआ तुल, लहणा हत्थ ना कोई फड़ाईआ। मन वासना गए भुल्ल, भरम भरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दीवाली घर घर दए दुहाईआ।

जगत दीवाली कहे साचा वेखो जगदा इक्को दीआ, जो दीवानखानिआं करे रुशनाईआ। उस दे वेखण दा कर लउ हीआ, हिम्मत नाल आपणा आप उठाईआ। साची दीपक जगाउण वाली बण जाउ तीआ, तीमत आपणा रूप बदलाईआ। मिल के प्रेमी सच्चे प्रीया, दीपक जोत करे रुशनाईआ। लख चुरासी विच्चों अन्तम हीआ, हरि जू हरि हरि दए समझाईआ। अग्गे भोगणा सभ ने आपणा कीआ, कीमत सके ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत दीवाली रिहा समझाईआ।

जगत दीवाली कहे मैनूं आउँदा रिहा डर, डर डर रिहा सुणाईआ। खुशी होई नहीं घर घर, थोड़िआं विच्चों बहुते रहे पछताईआ। मंज़ल वेख्या ना किसे चढ़, सति दीपक ना कोई चमकाईआ। खाली वेख के किले गढ़, मैं अंदरों करां दुहाईआ। इउँ भासदा जिवें सभ दी उखड़न वाली जड़, सिर सके ना कोई उठाईआ। दीआ दीपक रिहा कोई ना बल, बलदी अग्ग ना कोई बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन भगतां साचा दित्ता किसे ना फल, कूड़ कुड़िआरां दीवे रिहा कराईआ। (१० कत्तक शहनशाही सम्मत १)

✻ ✻ ✻ ✻ ✻
✻ ✻ ✻ ✻ ✻

दीवाली कहे मेरा सच प्रकाश, प्रभ जोत नाल वडयाईआ। जुग जुग भगतां अंदर मेरा खेल तमाश, नित नवित्त साची सेव कमाईआ। हुक्म मन्न साहिब गुणतास, सच स्वामी सीस निवाईआ। जिन्नां दे अंदरों अन्ध अन्धेर जाए विनाश, अबिनाशी करता करे रुशनाईआ। तिस मण्डल होवे मेरी रहिरास, सच समग्री इक्क प्रगटाईआ। सच दवारे कर के वास, आपणा नूर दिआं चमकाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू जिस दे दास, तिस दा रूप अनूप प्रगटाईआ। खेल तक्क पृथ्वी आकाश, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। लख

चुरासी अंदर कर के वास, सृष्टी दृष्टी अंदर फोल फुलाईआ। कवण वस्सया प्रभ दे पास, भगत सुहेला कवण अखवाईआ । जिस दा साहिब उत्ते विश्वास, विशिआं तों बाहर राह तकाईआ। उस दी पूरी होवे आस, सिध्धा रस्ता देवे धुरदरगाहीआ। दीवाली कहे मैं भगतां देवां शाबाश, गुरमुखां नाल वडयाईआ । जिन्हां दा लेखा होवे खलास, चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। तन वजूद पहनणा पए ना कोई लबास, ओढण तन ना कोई हंढाईआ। पवण सवासी रहे ना कोई स्वास, रजो तमो सतो ना कोई रंग रंगाईआ। शंकर तक्कणा पए ना उत्ते कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म ना ध्यान लगाईआ। जिन्हां निरंतर प्रभ मेरा कीता प्रकाश, दीपक दीआ आत्म परमात्म दिता जगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ ।

दीवाली कहे मैं कोई धार नहीं अग्ग दी, दीवा बत्ती ना कोई वडयाईआ। मैं धार सूरे सर्बग्ग दी, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। प्रकाश विच्चों प्रकाश हो के जगदी, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मेरी खेल उप्पर शाह रग दी, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। मैं साथण नहीं जीव अलपग दी, कूड़ क्रिया ना कोई वडयाईआ। मेरी आशा भगतां प्रेम विच्च सद्द दी, सद्दा देवे थाउँ थाईंआ। उन्हां घड़ी सुलक्खणी होवे अज्ज दी, जिन्हां मिल्या धुरदरगाहीआ । जो सृष्टी जगत माया प्यार विच्च बलदी, ममता मोह विच्च हलकाईआ। साहिब सतिगुर दा साथ छड्डदी, नाता कूड़ नाल बंधाईआ। कूड़ी आसा होवे कॅग दी, तृष्ना तृप्त ना कोई रखाईआ। दीवाली कहे मैं प्रकाश हो के प्रकाश धुर दा लभ्भदी, भगत सुहेले वेख वखाईआ । मेरी आसा नहीं कोई मदि दी, तृष्ना तृखा ना कोई वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

दीवाली कहे मैनूं ब्रह्मा कीता प्यार, दीपक दीआ अगम्म जलाईआ। विष्नूं मेरी बध्धी धार, जोती जोत नाल रुशनाईआ। शंकर मेरी कीती विचार, कैलाश उप्पर कर रुशनाईआ । इन्दर मेरा कीता दीदार, जोत वेख अगम्म अथाहीआ। पड़दा चुकदे रहे पैगम्बर गुर अवतार, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। मेरी जगमग जोत अपार, अपरंपर स्वामी दिती प्रगटाईआ । अष्टभुज मैनूं लिआंदा विच्च संसार, दीपक नौ नौ जगाईआ। फेर जगी बल दवार, बावन रंग वेख्या चाईं चाईंआ। राम दिता आधार, मिली माण वडयाईआ। कृष्न ने अरजन दिता वखाल, प्रभ जोती जोत रुशनाईआ। मैं जुग जुग चलदी रही साल बसाल, सम्मत सम्मती पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा वेखदी रही हाल, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। बिना भगतां घर दीपक सक्कया कोई ना बाल, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जगत दीवाली सभ नूं कीता कंगाल, जगत वासना विच्च सृष्ट हलकाईआ। मैं सदा जगदी रही सच सच्ची धरमसाल, काया मन्दर अंदर आपणी आप कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस अंदर आपणा दीपक देवे बाल, दीवाली कहे मैं सदा उस दे नाल जगत रंग दा पन्ध मुकाईआ। (१३ कत्तक शहनशाही सम्मत ६)

✻ ✻ ✻ ✻ ✻
✻ ✻ ✻ ✻ ✻

कलिजुग कहे दीवाली मेरा लुट्टण आई सोना चांदी, चन्द सितार अक्ख खुल्हाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया भन्नण आई हाण्डी, उम्मत नबी रसूलां ध्यान लगाईआ। लेखा वेखण आई जन भगतां किस बिध चलदी कांडी, कांड दीन दुनी बदलाईआ। जिस झगढ़ा मेटणा सूर गाँ ढांडी, ढंडोरा देवे अगम्म अथाहीआ। प्यार रहणा नहीं आंढी गवांढी, संगी संग ना कोई बणाईआ। कलिजुग अन्तम सभ दी पत्त जांदी, जांदी सके ना कोई अटकाईआ। गुर अवतारां पूरी करे तांघी, तृष्ना पैगम्बरां लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

कलिजुग कहे दीवाली कढ्ढे मेरा दीवाला, दीवालीआ जगत जहान कराईआ। मैं अग्गे किस दा दिआं अहिवाला, संदेशा संदेश विच्चों जणाईआ। की खेल करे पुरख अकाला, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने लेखे लाया भगतां दा गुरमाला, गोबिन्द गढ़ी चमकौर गिआ जणाईआ। उह लेखा वेखे अन्तम हाला, हालत दीन दुनी खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट होणा अन्धेरा काला, कल कलकी आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे समां रहे ना बाहला, जगत वंड ना कोई वंडाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदिआं बदल देवे चाला, चाल अवल्लड़ी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

कलिजुग कहे दीवाली करें केहड़ी कारी, की करनी कार कमाईआ। मुहम्मद लेखा रिहा विचारी, बिन नैणां नैण उठाईआ। नाता तुटदा जांदा चार यारी, याराना तोड़ ना कोई निभाईआ। चारों कुण्ट रैण अंधिआरी, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। मुहब्बत रहे ना किसे प्यारी, प्रेमी प्रीतम प्रेम ना कोई निभाईआ। चारों कुण्ट होणी खुआरी, खार विच्च दिसे लोकाईआ। जिस ने भगतां दी लेखे लाउणी सीस चुक्की होई तग़ारी, तरा तरा आपणा हुक्म वरताईआ । सभ दी अन्तम करे बेइतबारी, इतबार सके ना कोई रखवाईआ। उम्मत उम्मती करे ग़दारी, साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी कला वरताई ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर खेल वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ।

कलिजुग कहे दीवाली लेखा वेखे सभ दा उत्ते वही, खाते पूरब फोल फुलाईआ। जिस दी पैगम्बरां पाई सही, सही सलामत नूर इल्लाहीआ। जिस ने भगतां लेखे लाउणी पहली कत्तक वाली कही, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। निरगुण धार बण मुदेई, मुद्दा वेखे थाउँ थाईंआ। जगत चानणा चन्न कोई ना रही, रैहमत रहीम ना कोई कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ ।

दीवाली कहे मेरा किसे ना समझिआ चानण, अक्खां वालिआं नज़र कदे ना आईआ। मैनूं कोटां विच्चों भगत सुहेले जानण, जिन्हां दी जननी मिले वडयाईआ। मेरा प्रकाश उत्ते असमानण, नूर नूर विच्च रुशनाईआ। मेरा सच घर दा कामन, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ । मैनूं राम ने राम दा कीता जामन, विचोला विचला इक्क बणाईआ। दीवाली कहे जिस वेले भगवन भगतां दे अंदरों मेटे अन्धेरी शामन, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। उस वेले प्रकाश होवे कोटन भानन, जगत दीपक दी लोड़ रहे ना राईआ। हरिजन तक्कण ज़िमी असमानण, ज़िमी असमान तों बाहर इक्को नूर नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

दीवाली कहे मैनूं सभ ने किहा दौली, दौलतवंद अखवाईआ। मेरा खेल उप्पर धौली, धरनी धरत धवल सुहाईआ। मैं सच दस्सां दीनां मज़्हबां दी कीमत नहीं रहणी पौली, रुपईआ रोक ना कोई वखाईआ। सभ दा लेखा मुकणा हौली हौली, हौले भार सर्ब दए वखाईआ । मैं जुग चौकड़ी होई नहीं तौली, आहिस्ता आहिस्ता आपणा पन्ध मुकाईआ। नव नौ चार पिच्छों जन भगत फरकन डौली, डांवाडोल होए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करे धरनी नाल धौली, धर्म दी धार नाल बंधाईआ । (२ कत्तक श सं ७)

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

नारद कहे राम वेख लै आपणी दुनियां वाली दीवाली, दिवाला निक्लया खलक खुदाईआ । अन्तर निरंतर सभ दी धार होई काली, बाहर दीपकां करन रुशनाईआ। घर मन्दर सोहे ना कोई धर्मसाली, पवित्र गृह नज़र कोई ना आईआ। फल रिहा ना किसे पत डाली, टैहणी टैहणी रंग ना कोई रंगाईआ। मैं वैरागण हो के बणां सवाली, दर तेरे वास्ताा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

दीवाली कहे सुण मेरे राम रमईआ, रमता रमता दिआं जणाईआ। संदेशा देवां साचे सईआ, की सुनेहड़ा रिहा दृढ़ाईआ। लेखा वेख लै कढ्ढ के आपणी वहीआ, बिन अक्खरां अक्खर ध्यान लगाईआ। जो इशारा कीता मां मतरेई ककईआ, दसरथ संग ना कोई रखाईआ । की धार होणी कलिजुग अन्तम कूड़ कुड़िआर दी नईआ, मोह विकारा हड़्ह वगाईआ। की आशा रक्ख के गई दुर्गा अष्टभुज मईआ, सिँघ असवार ध्यान लगाईआ। की संदेशा दे के गिआ काहन घनईआ, घनी शाम की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

नारद कहे राम जी बाहरों जगदे वेख लै दीवे, तेल बाती नाल दीन दुनी वडयाईआ । तेरी नाम मस्ती विच्च कोई ना खीवे, साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। सचखण्ड दवारिउँ वेख लै हो के नीवें, धरनी उत्ते ध्यान लगाईआ। सच प्यार कोई ना जीवे, कूड़ क्रिया जगत हलकाईआ। सभ दा लहणा तक लै अन्तम साडे तिन्न हत्थ सीवें, शाह पातशाह बच्या रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे राम जी दीवा बाती केहड़े कार, तेल बत्ती की वडयाईआ। जिन्हां दे अन्तर वस्सया नहीं निरँकार, हिरदे हरि ना कोई टिकाईआ। उह फिरदे विच्च अन्ध अन्धयार, जगत लोचन ना कोई रुशनाईआ। कलिजुग दा तक्क लै विवहार, की विवहारी कार कमाईआ । जिस ने सृष्टी मानव जाती कीती बेकार, बेरुजगार होई लोकाईआ। आत्म परमात्म किरत करे ना कोई संसार, साची करनी ना कोई कमाईआ। गुरदर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ रोवण धाहां मार, कूक कूक सुणाईआ। हरि भगत दवारा करे गिरयाज़ार, हाए उफ कर जणाईआ। प्रभू दी धार तों जगत जहान होया बाहर, प्यार विच्च ना कोई समाईआ। दीआ बाती जगत मन्दरां उत्ते करे उजिआर, काया अन्धेरा दूर ना कोई कराईआ। नाले राम नूं कीती निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। झट राम ने कीता इशार, सैहज नाल सुणाईआ। नारदा सतिजुग कूक रिहा पुकार, दो जहान सुणाईआ। मेरा मार्ग होवे अपर अपार, अपरंपर स्वामी दए वडयाईआ। कोई दीवा बत्ती अग्गे जगाए ना भगत दवार, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। जो बुझ जाए फिर हो ना सके उजिआर, जगावण वाला नज़र कोई ना आईआ। हरि भगत दवारे अंदर हरि भगत उह होण जिन्हां दे अंदर प्रभू दा दीप सदा रहे त्यार, दिवस रैण इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे राम जी आपणा पुराणा वेखो हिसाब, जगत अंकड़िआं बाहर ध्यान लगाईआ । आपणी कढ्ढ के वेखो किताब, बिन हरफ़ हरूफ़ लिखवाईआ। सम्मत शहनशाही बारां दा रिवाज, सैहज नाल समझाईआ। हुक्म देवे गरीब निवाज़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो हुक्म वरतणा देस माझ, लेखा लिखणा कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

शहनशाही सम्मत बारां कहे मेरे अन्तर आए अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । दीवाली वाले दिन भगत दवारे वज्जा होवेगा जंद, जंदरा कुंजी हत्थ ना किसे फड़ाईआ। नौं दिन फेर रहेगा बन्द, अंदर वड़ दरस कोई ना पाईआ। एह खेल करे सूरा सरबन्ग, हरि करता धुरदरगाहीआ। ढाई साल तक्क जेठूवाल दी संगत परशाद सके कोई ना वंड, भोग घर ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल सदा बख्शंद, बखशिश रैहमत आपणी आप कमाईआ। (१८ कत्तक शहनशाही सम्मत ११)

* * * * *
* * * * *

जगत दुसहिरा दहिसर रावण, राम राम दुहाईआ। राम नालों दहिसर नूं बहुते गावण, एह प्रभ दी बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा नाल बावन, निरगुण धार अगम्म अथाहीआ। जिस दा हिसाब गुरू ग्रंथ दी धार इकावन, पंज इक्क सोभा पाईआ। जिस दा भेव जगत जुग दामन, पलू जगत वखाईआ। रावण दा भेव ना कोई आया समझावण, कवण राम कवण रावण रावण राम की वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क समझाईआ।

रावण राम कदे ना मरदा, मरन विच्च कदे ना आईआ। जिस नूं राम मारया उह रावण सचखण्ड दवारे वड़दा, सच सच विच्च समाईआ। जिस रावण पिच्छे राम रिहा लड़दा, उह रावण राम रूप पहलों आया प्रगटाईआ। जे रावण एह खेल ना करदा, फेर आदि दी रीती जुग जुग पूर ना कोई कराईआ। एह खेल ओस अगम्मे घर दा, जिथ्थे राम ते रावण बैठे सोभा पाईआ। जगत विहार मन मत बुद्धि विच्च चलदा, द्वैत सभ दे विच्च टिकाईआ। भारत वालिआं आपणा माण रक्खया इक्क गल्ल दा, आपणी लै अंगड़ाईआ। अंदाज़ा नहीं लाया ओस दे बल दा, जिस त्रेता जुग दिता बदलाईआ। जगत जगिआसूआं विचार चलदा, जीव जंत सलाह पकाईआ। साडा राम अवतारी अयुध्या मलदा, सिँघासण सोभा पाईआ। सभ दे अंदर सल क्यों सीता नूं रावण छलदा, सतवन्ती सति गवाईआ। एसे गुस्से विच्च भारत रावण जलदा, असल भेव ना कोई खुल्हाईआ। सच सच सच रावण ते राम इक्को दवारे पलदा, दूजा दर ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक पड़दा दए चुकाईआ।

(५ कत्तक स स ५)

* * * * *
* * * * *

रावण आसा सवा लक्ख नाती, रक्त बूंद वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा लेखा लिख सके ना कलम दवाती, चार वेद छे शास्त्र समझ कोई ना पाईआ। जिस दे कोलों खेल कराया कमलापाती, पतिपरमेशवर आपणा हुक्म सुणाईआ। उह रावण जगत विद्या समराथी, गुणवान अखवाईआ। जिस दा लेखा बणया नाल राम रघुनाथी, रघुपत खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ।

सवा लक्ख नाती रावण तृष्ना, तमा तन रखाईआ। जिस दी शहादत देवे शिव ब्रह्मा विष्ना, त्रैगुण अतीते आप दृढ़ाईआ। उस दा भेव जाणे कवणा, बुद्धि विच्च ना कोई

चतुराईआ । जिस कारन दसरथ बेटा जंगलां विच्च भवणा, दहि दिशा भज्जया वाहो दाहीआ। उह खेल अगम्मा बिन रावण राम किसे ना मन्नणा, दूसर समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ ।

सवा लक्ख नाती रावण आसा, साह साह विच्च समाईआ। जिस नाल तक्के पृथ्मी अकाशा, गगन गगनंतर भेव खुल्हाईआ। मन मन्दर अंदर पावे रासा, सुरती खेल खिलाईआ। जपे स्वास स्वासा, बिन रसना जिह्वा हिलाईआ। धुर दा मन्ने आखा, की राम दा राम समझाईआ । जिस दी पुत्तर धीआं वाली गिणती नहीं कोई शाखा, शनाखत सके ना कोई कराईआ। उह निरगुण निरवैर निरँकार दा साका, बिना राम दे पढ़न कोई ना पाईआ। त्रेता द्वापर जिस दीआं करदे आउँदे बाता, सिफ्तां विच्च सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी खेल वरताईआ।

सवा लक्ख नाती रावण तमन्ना, तामस तमन्ना नाल मिलाईआ। जिस दा भेव ना जाणे गंगा गोदावरी सुरसती जमना, अठ्ठ सठ समझ किसे ना आईआ। जिस विच्च लहणा देणा वरनां बरनां, चुरासी तांघ रखाईआ। हिसाब किताब जम्मणा मरना, काल पावे नाल बंधाईआ। निर्भय हो नहीं डरना, आपणा बल वखाईआ। सीता सवाणी जंगल हरना, आपणा रूप बदलाईआ। चार जुग तों वक्खरा वेद पढ़ना, एह तृष्ना रावण अग्गे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ ।

सवा लक्ख नाती रावण अन्तर अन्तश ख्वाहिश, खालस समझ किसे ना आईआ। बिना राम दे राम तों करी ना किसे तलाश, खोजत खोजत खोज ना कोई समझाईआ। जिस सुहावणा बनवास, राम जंगलां विच्च भवाईआ। उह लेखा जाणे साहिब गुणतास, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस मन का गढ़ सुहाया आप, दह दिशा रंग रंगाईआ। अंदर वधा के रोग सन्ताप, सहिंसिआं विच्च समाईआ। शास्त्र दे के जाप, दिती माण वडयाईआ। उस विषे नूं समझ सक्कया ना कोई साख्यात, जिस कारन राम रावण दोवें लोकमात प्रगटाईआ । जगत कहाणी जो विद्या विच्च कोई गिआ आख, विद्वानां सिफ्त सालाहीआ। बाकी सारे करदे पसचाताप, सहिसा मन ना कोई चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सवा लक्ख नाती रावण दे अंदर दी झाकी, जिस दा लेखा जाणे कुछ विशिष्ट जिस निरंतर खुल्ही ताकी, संदेशा पाती पतरका राम राम राम समझाईआ। (३० अस्सू शहनशाही सम्मत ६)

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

इक दिन बाले नानक नूं गंना दित्ता जिस दी इक्की पोरी, ढाई हत्थ उतला हिस्सा बाकी दित्ता रखवाईआ। हत्थ नाल दित्ता मरोड़ी, हिस्सा अड्ड वंडाईआ। उस ओस वेले कीता बौहड़ी, दित्ती हाल दुहाईआ। बाल्यां बाकी नानक नाल मिल के हुंदे जोड़ी जोड़ी, मैनूं वक्खरा दित्ता बहाईआ। बाले किहा अज्ज दिन लोहड़ी, रस चक्खण नूं साडा वी जी कर आईआ। गंने किहा मेरा नहीं कोई जोरी, पर अधीन रिहा कुरलाईआ। ओधरों नानक बोल पिआ हौली, हौली जिही आख सुणाईआ। एह की गल्ल केहड़ी घुंडी खोल्ही, मैनूं दिउ जणाईआ। बाले किहा एह ऐवें पौंदा रौली, गंना देवे पिआ दुहाईआ। ओस किहा मेरी रुत्त अजे पूरी नहीं मौली, आपणा रंग वखाईआ। ओधरों बाले ने जेब विच्चों कढ्ढ लई कौली, पैर हेठां दब्ब के जोर नाल वट दित्ता चढ़ाईआ। ओस गंने ने आपणी रत्त रस धार डोल्ही, हाए सी ना कोई सुणाईआ। उधरों गुरू नानक ने सज्जे हत्थ दी उंगलीं विच्च डुबो लई, पोटे नूं ला के आपणे मुख विच्च लाईआ। ओस वेले उस ने किहा मैं घोल घोली, आपणा आप गवाईआ। सतिगुर मैनूं रक्ख लै आपणी काया अंदर चोली, मेरा दुखड़ा दे मिटाईआ। गुरू नानक किहा बहुता ना बोलीं, तैनूं दिआं समझाईआ। तेरे प्यार रस दी रस बणना विचोली, भगवन रिहा जणाईआ। ओस किहा एह धार वक्खरी निरोली, समझ कोई ना पाईआ। नानक किहा जिस वेले मेरा मालक आपणयां भगतां दी चुक्कण आवे डोली, लोकमात फेरा पाईआ। ओसे वेले तेरी गंढ्ढ फेर लवे खोल्ही, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

इक्की गंढ्ढां पा बैठीआं झगढ़ा, इक्ठीआं रहीआं जणाईआ। कुछ सानूं दस्स भेद अगला, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। जिस वेले उह मालक आया सगला, मित्र बेपरवाहीआ। उह इकीआं विच्चों किहनूं चंगा लग्गणा, किस नाल प्रेम वधाईआ। नानक किहा उस सभ दा इक्को जिहा हिस्सा रक्खणा, वड्डी छोटी ना कोई वडयाईआ। ओस दा हिसाब ओसे नूं जचणा, ओसे दे हत्थ वडयाईआ। उहनां किहा कितना कि कितना, सानूं दे समझाईआ। नानक हस्स दे किहा निक्कीउ इतना, जिहनूं इकी सेर दित्ता बणाईआ। तुसां भगतां दे दवारे विकणा, इकी इकी गंढ पवाईआ। मैं तुहाडीआं सिफ्तां दा लेख लिखणा, शब्दी देवां गवाहीआ। तुहाडा प्रेम प्यार रस मिठ्ठणा, गुरमुखां दिआं चखाईआ। तुसां किसे होर उत्ते नहीं विस्सणा, थोड़ा जिहा पड़दा दिआं खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ। (२६ पोह २०२१ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

वरुण कहे मेरी एह लोहड़ी, देवतिआं विच्चों प्रभ दित्ती वडयाईआ। सभ तों कर के चोरी, बूंद स्वांती मेरी झोली पाईआ। वस्त दित्ती ज़ोरी, ज़ोरावर बेपरवाहीआ। हत्थ फड़ के डोरी, मेहर नज़र उठाईआ। देवत वेख एह लग्गी धार कौड़ी, धार असुर करे

लड़ाईआ । खुदी हँकार दी रली जोड़ी, झगढ़े विच्च वडयाईआ। साची वस्त किसे ना मिली भोरी, भरमां विच्च आपणा आप गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल दया कमाईआ।

वरुण कहे साचे दिवस मिली वड्डिआई, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। बूंद स्वांती प्रभ ने झोली पाई, भण्डारा दित्ता भराईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ सुणाए, संदेशा धुरदरगाहीआ । सृष्टी नाल नाता रिहा जुड़ाई, जग जीवण दाता आपणी दया कमाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच्च वज्जदी रहे वधाई, साचा घर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

वरुण कहे मैं अमृत लै के रस, रसीआ हो के सीस निवाईआ । जोड़ के दोवें हत्थ, बन्दना विच्च खुशी मनाईआ। खोल्ह के आपणी अक्ख, तक्कया बेपरवाहीआ। सो खुशीआं विच्च गिआ हस्स, ग़मी रूप ना कोई बदलाईआ। शब्द अगम्मी दित्ता सच्च, सच दित्ती सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाईआ।

वरुण कहे साचे दिवस मोहे दित्ता दान, देवणहार दया कमाईआ। मेरे अन्तर बख्श ज्ञान, भेव अभेदा दित्ता खुल्हाईआ। तेरा लहणा देणा ज़मीन तों उत्ते थल्ले असमान, हुक्मे अंदर बंधन पाईआ। ऊँचां नीचां रहणा विच्च दरमयान, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ । बिन तेरी धार उपजे ना कोई पकवान, राज़क रिजक रहीम तेरे हत्थ दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

वरुण कहे हुक्म दित्ता धुरदरगाह, धुर दी धार जणाईआ। सच संदेशा इक्क सुणा, मेरी बणत लई बणाईआ। वस्त अमोलक इक्क वरवा, वक्खरी धार दृढ़ाईआ। वायू अंदर जल मिला, थलां देणी वडयाईआ। खेल करना विच्च जहान, हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। तेरी पुशत पनाह सदा रहवां, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सदा जुग बदलदा रहवां नवां, चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आप वरताईआ।

वरुण कहे मैनूं सद्द के पास, आपणे विच्चों आपा दित्ता जणाईआ। साची वस्त पूंजी लै रास, वस्त अमोलक आप वरताईआ । मेरी मेहर तेरे साथ, जल पाणी रूप वटाईआ। धरत तों जावे आकाश, आकाश तों धरत उत्ते सुहाईआ। अगम्मा खेल तमाश, तैनूं दिता दृढ़ाईआ। वरुण कहे उह पोह दा दिन अखीरी ख़ास, अगली थित ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

वरुण कहे मैनूं आई अगम्मी बाणी, बलहीण दित्ती जणाईआ । खेल वरवाया पवण पाणी, बसन्तर भेव चुकाईआ। नज़री आई अगम्म निशानी, निशाना दित्ता दृढ़ाईआ। मेरा

खेल धुर जगत जहानी, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। बखशिश कर के अमृत रस जीवत जुग पाणी, झोली दित्ती भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप समझाईआ।

वरुण कहे मेरे उत्ते किरपा करी, किरपाल दित्ती वडयाईआ। मेरे अन्तर लो दित्ती हरी, लो हरी आप कराईआ। एह वेख देवतिआं औखी होई घड़ी, दुःख अंदरे अंदर मनाईआ। झगढ़े विच्च लड़ाई होई बड़ी, मूर्ख हो के झगढ़ा पाईआ। पुरख अकाल कोलों मंग मंगी खरी, झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

वरुण कहे मैं मंगते कीती आस, अन्तर ध्यान लगाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरे हत्थ वडयाईआ। सभ नूं दे दात, झगड़ा करे कोई ना राईआ। दूसर होवे ना कोई घात, घाउ अवर ना कोई लगाईआ। सभ किछ तेरे हत्थ पुरख अबिनाश, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

पुरख अकाल किहा वरुण दोवें जोड़ हाथ, भुजां अग्गे वधाईआ। तेरी झोली पावां दात, साढे तिन्न सेर वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी रहवे तेरे साथ, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। वरुण किहा किथे रक्खवां सांभ, सच दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ।

पुरख अकाल किहा एह जल साढ़े तिन्न सेर, कहावत जगत वाली बणाईआ। बखशिश वाली मेहर, तेरी झोली पाईआ। बिन मेरे भगतां सभ दा हुंदा रहे भेड़, खुशी ग़मी विच्च बदलाईआ। देवतिआं कोलों छिड़ाई छेड़, सुघड़ सिआणे मूरख देणे बणाईआ। वरुण किहा की लेखा दएं नबेड़, हुक्म इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल किहा नहीं लहणा चुकावां फेर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्त हंढाईआ। चार जुग दा रक्ख के गेड़, गेड़े विच्च वेखां लोकाईआ। कलिजुग अन्तम बण के आवां सिँघ शेर, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। शब्दी धार जन्म लवां ना विच्चों किसे जेर, जेरज अंड ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

वरुण कहे मेरे अन्तर कीती लो हरी, लोड़ींदा सज्जण पाया। खुमारी बेअन्त चढ़ी, खुशीआं रंग रंगाया। सुहञ्जणी होई घड़ी, दीन दयाल दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया।

वरुण किहा तेरी बखशिश साढे तिन्न सेर पाणी, पवण पाणी जिस दी सेव कमाईआ। पुरख अकाल शब्द सुणाए अगम्मी बाणी, बाण निराला दित्ता लगाईआ। एह लेखा चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भज सेतज नाल रलाईआ। बिन इस दे होए वैरानी, साचा सुक्ख

ना कोई उपजाईआ। वरुण कहे मेरे अंदर आई हैरानी, परेशान हो के सीस झुकाईआ। किरपा कर मेरे शाह सुल्तानी, मेहर नज़र उठाईआ। इस जल दी की कहाणी, मैनूं दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे जिस वेले मैं भगतां दा बण के आया बानी, पारब्रह्म हो के वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ।

पारब्रह्म कहे मेरा खेल तमाश, समझ कोई ना पाईआ। कलिजुग अन्तम औणा ख़ास, ख़ालस आपणा नूर करां रुशनाईआ। भगतां बणां दास, साचा रंग रंगाईआ। तेरी पूरी करां आस, मनसा नाल मिलाईआ। भगतां हो के दास, साची सेव कमाईआ। धर्म प्रीती दे विश्वास, आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ।

वरुण कहे प्रभू मेरे अंदर कीती लो, आपणी दया कमाईआ। शब्दी धार लिआ मोह, मुहब्बत विच्च जुड़ाईआ। साचा जाप दे के सोहँ सो, सुरती दित्ती बदलाईआ। विरक्त कर निर्मोह, आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

वरुण कहे मैनूं कीती लो हरी, आपणी दया कमाईआ। बाकी ते औखी आई घड़ी, देवत करन लड़ाईआ। मैं प्रभ दे अग्गे मिन्नत करी, एह की खेल दित्ता रचाईआ। पुरख अकाल किहा मूल ना डरीं, सिर तेरे हत्थ रखवाईआ। एह खेल करनी कलिजुग घर घरीं, बचया रहण कोई ना पाईआ। सृष्टी करनी दीन मज़्हब शरअई, शरअ विच्च हलकाईआ। साबत रहे ना कोई सही, सति सच ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ।

वरुण किहा प्रभ हरी कीती लो, हरि मन्दर दित्ता वखाईआ। अमृत रस चो, बूंद सवांत पिलाईआ। मार्ग दस्स के दो, झगढ़ा प्रेम वंड वंडाईआ। सृष्टी नाल कर के धरोह, भगतां रंग रंगाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म दित्ता उह, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वरुण कहे मैं अग्गे हो, सीस दित्ता झुकाईआ। प्रभू तेरा खेल जाणे को, कवण वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा मैं जिन्ह्नां बख्शां आपणा मोह, आपणे रंग रंगाईआ। सो मेरा चरन कँवल पीवण धो धो, आपणी मैल गवाईआ। सृष्ट सबाई लड़े हो के दो दो, झगढ़ा रहे लोकाईआ। सुक्ख रहे ना किसे गरोह, हंगता विच्च दुहाईआ। जो मेरे जावण हो, हिरदे वड़ के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ।

वरुण किहा भगतां केहड़ी होवे धार, प्रभ साचे दे जणाईआ। केहड़ा वक्त होवे संसार, कवण थित वडयाईआ। कवण दर होवे दरबार, दरवाज़ा कवण खुल्हाईआ। कवण गावे

मंगलाचार, धुर दा गीत सुणाईआ। कवण वेखे विगसे पावे सार, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ । पुरख अकाल किहा मैं सभ कुछ करनेहार, करनी दा करता बेपरवाहीआ। जिस वेले जुग चौकड़ी बीते विच्च संसार, कलिजुग अन्तम डंक वजाईआ। चारों कुण्ट होवे धूंआंधार, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। अमृत मेघ बरसे ना कोई नाल प्यार, दुखीआं दर्द ना कोई वंडाईआ। सृष्टी दृष्टी विच्चों आपणा इष्ट जाए हार, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उच्ची कूक करन पुकार, सच सच सुणाईआ। किरपा कर पुरख अकाल, तेरे हत्थ वडयाईआ। ओस वेले आवां निरगुण धार, जोती जोत कर रुशनाईआ । जन भगत सुहेले लवां उठाल, सुरती शब्दी आप जगाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, एका रंग रंगाईआ। भगत दवार बणा सच्ची धर्मसाल, दर इक्को दिआं वखाईआ। तूं मेरा जल रक्खणा संभाल, जुग चौकड़ी ना किसे फड़ाईआ। कलिजुग अन्त अख़ीर जन भगतां दिआं प्याल, अमृत रस बणाईआ। दीन दुनी होए बेहाल, बिहबल हो के मात कुरलाईआ। वरुण कहे मैं फेर कीता नहीं कोई सवाल, सिर दे के आपणा सिर बचाईआ। तेरे हत्थ तेरी अवल्लड़ी चाल, तूं दाता बेपरवाहीआ। दीनां बंधप होणा दीन दयाल, दयानिध तेरी ओट रखाईआ । वरुण कहे मैं कहवा लो हरी लोहड़ी कहे जहान, लोहड़ी कहण वाला लोड़ींदा सज्जण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नवीं फुलवाड़ी दा दे के दान, वाड़ी आपणी आप सुहाईआ। (३० पोह शहनशाही सम्मत २)

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

सदी चौधवीं कहे मेरी खुशीआं वाली लोहड़ी, अंक सहेलड़ीओ दिआं जणाईआ। वेखो मेरी प्रभ दे नाल बण गई जोड़ी, जोड़ा धुर दा लिआ बणाईआ। ना मैं काली ना मैं गोरी, रूप रंग रेख नज़र ना कोई पाईआ। मेरे मालक मेरे उत्ते किरपा कीती भोरी, भाण्डा भरम दित्ता भन्नाईआ। दीन दुनी तों कर के चोरी, चरनां विच्च लिआ रखाईआ। मेरा माण ताण ना ज़ोरी, निउँ निउँ लागाँ पाईंआ। मैं आदि जुगादि दी बांकी छोहरी, छैल छबीली नज़री आईआ। मेरी आसा नवीं नकोरी, निरवैर दित्ती वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरा साहिब स्वामी सज्जण, सोहणा नज़री आईआ। मैं प्रेम प्रीती करां मज्जन, धुर दा रंग रंगाईआ। सच संदेशे आई सद्दण, होका इक्क अलाईआ। मेहरवान महिबूब सच मुहब्बत विच्च रहे तेरी लगन, दूसर अवर ना कोई मनाईआ। ममता मोह रहे ना बंधन, कूड़ी क्रिया देणी कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं लोहड़ी वंडां, वंडी धुर दी पाईआ। मैं प्रभ दे कोलों प्रीती लै

के आई पंडां, अनडिठ्ठड़ा भार उठाईआ। मैं किसे वड़ी नहीं मन्दर मसीत गुरदवार शिवदवाले मट्ठ पत्थर इट्टां वाली कंधां, महिराबां विच्च ना डेरा लाईआ। मैं तक्कदी इक्क चन्दा, जो चन्द नूर करे रुशनाईआ। जो खेल वखाए सूरा सर्बंगा, सो सच दिआं समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान दया कमाईआ ।

सदी चौधवीं कहे मेरी लोहड़ी दा लोहड़े पैणिआ ना कीता चाउ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ । मैं हलूणयां फड़ के बाहों, अक्ख दित्ती खुल्हाईआ। वेखो हँस होए काउँ, काग हँस रूप बदलाईआ । साचा धर्म ना कोई नयाउँ, अदल इन्साफ़ ना कोई कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सदी चौधवीं कहे लोहड़ी दे थां प्रभ दा मिले प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। तुसीं उहदे उह तुहाड्डा यार, याराना धुर दा लिआ लगाईआ। भरोसे विच्च रक्खो इतबार, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मेहरवान करे सच शिंगार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सदी चौधवीं कहे चाउ अंदर गाओ मंगल, मंगलाचार वडयाईआ। शरअ कट्टो संगल, ज़ंजीरी नज़र कोई ना आईआ। सच प्रीती चढ़े अगम्मी रंगन, रंगत इक्क रंगाईआ । तुहाड्डा पवित्र होवे बदन, अन्तर आत्मा नूर रुशनाईआ। सच दवारा मिल्या पतन, दरगाह विच्च वडयाईआ। दीन दयाला आया रक्खण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक्क वखाईआ ।

सदी चौधवीं कहे मेरे साहिब दा वेखो आग़ाज़, अकल बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। धुर दे नाम दी सुणो आवाज़, जो अज़ल तों दए बचाईआ। जिस आपणी साजण साज, सगला संग गुरमुख रिहा तराईआ। सति धर्म दा बदल के आप रिवाज़, रयाइत आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणी खेल खलाईआ।

(२६ पोह शहनशाही सम्मत ४)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

अवतार पैगम्बर गुर कहण प्रभू तेरयां भगतां मंगी लोहड़ी, लोआं पुरीआं तों बाहर ध्यान लगाईआ। किशन सिँघ हाल दुहाई कीती बौहड़ी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। दात विच्च मंगण भगत भगवान दी बणी रहे जोड़ी, नाता आत्म परमात्म रखवाईआ। सोहँ धार मिट्ठा रस दे गुड़ रोड़ी, रोड़ा कूड़ रहे ना राईआ। पिच्छे देंदा रिहों भोरी भोरी, हुण झोली दे भराईआ। साध सन्त तैनूं लभ्भदे चोरी, अंदर वड़ ध्यान लगाईआ। भगतां आपणे

नाल बन्नृ लै डोरी, अग्गे सके ना कोई तुड़ाईआ। मन कल्पणा वलों मोड़ीं, मूरख मूड़ आप समझाईआ। साडी मंग बहुती थोड़ी, खुशीआं नाल मंग मंगाईआ। वेखीं दर आए किसे ना होड़ीं, करवट आपणी ना आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण जन भगत मंगदे मुराद चंगी, लोड़ींदे सज्जण देणी पाईआ। साडी पिठ्ठ रहे ना नंगी, मेहर नज़र हत्थ उठाईआ। दुःख भुक्ख रहे ना तंगी, सुख सागर विच्च समाईआ। नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, लोचन देणा खुल्हाईआ। आत्म धार रहे ना रंडी, कन्त सुहाग होणा सहाईआ। पिछली टुट्टी जाए गंढी, अग्गे सके ना कोई तुड़ाईआ। मन वासना रहे ना मंदी, मोह ममता परे तजाईआ। सिर झुके किसे ना डंबी, परवण्डी संग ना कोई निभाईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोई पाबन्दी, शरअ ज़ंजीर देणे कटाईआ। झगढ़ा मुकौणा जेरज अंडी, उत्भुज सेतज खैहड़ा देणा छुडाईआ। नाम मुहाणा देणा वंञी, संसार सागर पार कराईआ। आत्म सेज सुहौणी मंजी, सिँघासण आपणा आप वडयाईआ। दूई दी धार रहे ना कंधी, हउमे रोग देणा गवाईआ। भगत भगत दा बणौणा सतिसंगी, गुरमुख गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। निंझर रस देणा अनन्दी, अनन्द आपणा इक्क वरताईआ। वासना मूल रहे ना गंदी, दुरमत मैल देणी धवाईआ। पिछली पिच्छे जेहड़ी लंघी, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी खेल खिलाईआ।

अवतार पैगम्बर गुर कहण गुरमुख लोहड़ी मंगदे नाम निधान, तेरी सरनाईआ। अगला हुक्म दस्स पैग़ाम, हज़रतां दे हज़रत कर पढ़ाईआ। मंज़ल मार्ग होए आसान, रहबर राह देणा जणाईआ। शरअ ज़ंजीर रहे ना कोई गुलाम, गुरबत अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। इक्को कलमा दे कलाम, कायनात दे समझाईआ। इक्को महिबूब होवे मेहरवान, मुहब्बत विच्च समाईआ। इक्को रस पीण खाण, इक्को गंढ देणी जणाईआ। इक्को रंग महल्ल अट्टल महान, बेपहचान देणा जणाईआ। तेरा लेखा नौजवान, जुग जुग सभ दी झोली पाईआ। कलिजुग अन्तम मार ध्यान, ज्ञानी ध्यानी बैठे मुख भवाईआ। पवित्र होया ना कोई कर इशनान, अठ्ठ सठ सारे देण दुहाईआ। पुस्तक पढ़ पढ़ थक्का जहान, तेरा दरस कोई ना पाईआ। किरपा कर के जन भगतां आपे मिल आण, मिलणी आपणे नाल कराईआ। कोझयां कमलयां कर परवान, चिक्कड़ भरे गोद उठाईआ। साडे सिर कर अहिसान, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। प्रभू भगत नाले तेरे मंगते नाले तेरे महिमान, दोवें रूप दरसाईआ। नाले बुढ्ढे नढ्ढे बण अंजाण, रो रो कुरलाईआ। साडी झोली पा दे भगती दा दान, जगत लोहड़ी मंग ना कोई मंगाईआ। रसना मंगे ना पीण खाण, पान सपारी ना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

अवतार पैगम्बर गुर कहण जन भगत लोहड़ी मंगण कोई ना आया, पिछला जुग

दए गवाहीआ। कलिजुग खेल वेख बेपरवाहिआ, बेपरवाही विच्च समाईआ। हरिजन जो आपणे रंग रंगाया, रंग रतड़ा घर बहाईआ। उह छड्ड के जगत माया, झोली नाम अग्गे डाहीआ। दे वस्त जेहड़ी तोहे भाया, भाव भावनी ना कोई रखाईआ। माया ममता मोह तजाया, रजो तमो सतो संग ना कोई रखाईआ। आपणी काया चरनां भेट चढ़ाया, तेरा तेरी झोली पाईआ। नाम भण्डारा दे वरताया, मेहर नज़र इक्क उठाईआ । जन भगतां रल के शोर मचाया, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभू केहनूं कहें पराया, नाता जाएं तुड़ाईआ। जो तेरे दर ते आया, खाली परत मुख ना कोई भवाईआ। सच भण्डारे नाल दे रजाया, तृष्ना तृखा गवाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों लोड़ींदे सज्जण लोहड़ी मंगण तेरा हरिजन आया, भगत सुहेला पिछला पन्ध मुकाईआ। वस्त अगम्म दे वरताया, अमोलक आपणी झोली भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

पुरख अकाल कहे मेरी लोहड़ी सदा अनडिट्ठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। एह जगत रसना सवाद नालों मिट्ठी, रसना चक्ख कहण किछ ना पाईआ। ना एह अकाश मिले ना धरती वाली विच्चों मिट्टी, खोजिआं हत्थ किसे ना आईआ। ना एह काली ना एह चिट्टी, सूहा वेस ना कोई वटाईआ। ना एह वड्डी ना एह निक्की, जवानी रूप ना कोई दरसाईआ । कशत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश ना हिंदू मुलसमान ईसाई सिखी, तन वजूद ना कोई रखाईआ । ना कोई दो इक्क सरगुण निरगुण रूप दरसाए मन चिती, ठगौरी खेल ना कोई खलाईआ। कलम शाही नाल ना जाए लिखी, कागज जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी जिस नूं मेहरवान हो के दिती, किरपा निधान झोली आप भराईआ। ओसे लोहड़ी दी धार दी हाहे उत्ते बणी टिप्पी, जिन आत्मा दिती प्रगटाईआ। जिस आत्मा ने परमात्मा नाल मिल के अनेक ज़बानां दी बणाई लिप्पी, इल्म आलमां ताईं जणाईआ। साधां हत्थ फड़ा के चिप्पी, दर दर दिता भवाईआ। शरअ ज़ंजीर पवा के गिच्ची, गुर अवतार पैगम्बर दिते बंधाईआ। सृष्टी दे मथ्थे घसा दिते पत्थरां इट्टी, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरूदवार रगढ़ाईआ। इक्क थां कदे ना टिकी, जुग चौकड़ी भज्जी वाहो दाहीआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दुहत्थढ़ मार के पिटी, रो के दिता सुणाईआ। माटी ख़ाक विच्च लिटी, आपणा रूप बदलाईआ। फिर वास्ताा पा के मंगी चिठ्ठी, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मुखों हस्स के बात कीती मिठ्ठी, नैणां नीर वहाईआ। फेर तक्कया बिट बिटी, अक्ख ना कोई झमकाईआ। प्रभू किरपा कर दात दे दे दातार आपणी टिप्पी, जिस उत्ते टीका टिप्पणी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण की भाव प्रभू तेरी लोहड़ी, सच दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आपणी आपणे नाल बणा के जोड़ी, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपणी वस्त आपे दे के थोड़ी, आपणी झोली आप भराईआ। आपणी खेल आप तोरी, तुरत आपणी कार कमाईआ। जिस दा रूप नारी नर ना जोरू जोरी, जोरू नज़र कोई ना आईआ।

जोबनवन्ती ना बांकी छोहरी, मेंढी सीस ना कोई गुंदाईआ। हिरदा कपट ना दिसे कठोरी, ममता मोह ना कोई हलकाईआ। हाए उफ ना करे बौहड़ी, दुखी हो ना कदे कुरलाईआ। इक्को वर इक्को दर इक्को घर मेरा रही लोड़ी, सच लोड़ी नूं लोहड़ी दिता बणाईआ। एह रीती विष्न ब्रह्मा शिव ने तोरी, निरगुण कोलों निरगुण मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

लोहड़ी कहे मैं सारे वेखे मंगते, मंगे जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी गए लघँदे, समां समें विच्चों बदलाईआ। मैं खेल वेखदी रही ओस अनन्द दे, जो अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दर तों सारे गए मंगदे, गुर अवतार पैगम्बर झोलीआं डाहीआ। उह लोहड़ी प्रभू एहनां भगतां वंड दे, जिन्हां तेरी आस रखाईआ। जे पिच्छे विछड़े ते अग्गे गंढ दे, नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। शौह दरया जगत विच्चों बेड़ा बन्न्ह दे, फड़ आपणे कंध उठाईआ। जेहड़े तैनूं भगवन करके मन्नदे, उन्हां आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रेम दा साचा धन दे, मन मनसा कूड़ गवाईआ। फिक्के बोल ना सुणीए कन्न दे, चुगली निन्दिआ ना कोई चतुराईआ। जे किरपा करें ते दर्शन करीए गोबिन्द तेरे चन्न दे, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जेहड़े कूड़े नाते तन दे, जगत जाईए तजाईआ। अंदरों लेखे मुका दे ग़म दे, चिन्ता चिखा बाहर कढ्ढाईआ। मेल मिला लै हँ ब्रह्म दे, पारब्रह्म आपणे विच्च मिलाईआ। जन भगत जुग चौकड़ी जदों जम्मदे, जम्म के मंगते तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सच बख्शीश आपणा रूप ब्रह्म दे, पारब्रह्म सरनाईआ। लेखे रहण ना जन्म कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। भुलेखे कढ्ढ दे अंदरों भरम दे, हउमे हंगता रहे ना राईआ। आपणे घर विच्च आपणा जरम दे, जन भगतां भुल्ल जावे जम्मण वाली माईआ। सदा पुजारी रहण तेरे चरन दे, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। भय चुका दे डरन मरन दे, चुरासी गेड़ कटाईआ। तेरे हो के तेरे ढोले पढ़नगे, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरनाई सरन दे, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत ५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

मोहे माई देवे लोहड़ी, लोड़ींदी आसा पूर कराईआ। भगत भगवान बणी रहे जोड़ी, विछोड़ा दो जहान ना कोई कराईआ। प्यार मुहब्बत दी चढ़े रहण घोड़ी, हरिजन साचे आसण लाईआ। किसे दी आशा रहे ना खोरी, बहु गुण आपे दए कराईआ। सन्त सुहेले बणाए मोहरी, लोकमात दिते प्रगटाईआ। रैण मेटे अन्धेर घोरी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चरन लिआए खिच्च ज़ोरी, ज़बरदस्ती आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधान नाल बन्न्ह के डोरी, आत्म परमात्म रिहा जुड़ाईआ। जगत विकार रिहा होड़ी, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। हत्थ रक्खे पुशत पनाह मोरी, सीस जगदीस आप टिकाईआ। लोहड़ी कहे कुछ खेल

वखाउणा शाह अफगान नाल पिशोरी, पशावर पड़दा लाहीआ। खेल वेखणा दो धार दिसौरी, दोहरी आपणी कार भुगताईआ। दीन दुनी तक्के बण के जौहरी, जौहर आपणा इक्क प्रगटाईआ। सृष्टी नाता तुटे खौंत शौहरी, छोहर नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी करे बौहड़ी बौहड़ी, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,
सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

लोहड़ी कहे मैं पाउण आई लोहड़ा, लोड़ अवतार पैगम्बर गुरूआं पूर कराईआ। इक्को संदेस देवां गावां धुर दा दोहरा, दोहरी आपणी सेव कमाईआ। जिस प्रभू दा नाम खांदे रहे भोरा भोरा, मस्ती विच्च मस्ताने हो के खुशी बणाईआ। उह साहिब खेल करे होर दा होरा, अवर अवरा आपणी कार भुगताईआ। जन भगतां करन आया भाग मथोरा, मिथ्या दस्से सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

लोहड़ी कहे मैं की दस्सां आप, सप्तस रिखी देण मेरी गवाहीआ। जिन्हां रुत्त बदलण ते कीता सी जाप, माघी तों पहलां पिछली रुत्त बदलाईआ। नाले रो के किहा प्रभू तोड़ जगत सन्ताप, सहिसा पिछला रहे ना राईआ। आत्म ब्रह्म आपणा जोड़ नात, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना फेर मात, मातर वंड ना कोई वंडाईआ। धुर दे मालक बख्श दे दात, दयावान होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

लोहड़ी कहे मैनूं सदा मंगदे गए भगत, प्रभ अग्गे आस रखाईआ। दुनी खाण पीण दा नशा जगत, कूड़ क्रिया विच्च हलकाईआ। सिरफ सच दात लभ्भदे गुरमुख फकत, जो फिकरा इक्को गाईआ। इक्को सुहावणा समां समझण वक्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाता तोड़ के बूंद रकत, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। निगह मार उप्पर धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। सच दात केहड़ा देवे उतों अर्श, अर्शी प्रीतम झोली पाईआ। खुशीआं वाला नवां साल चढ़े बरस, चरन धूढ़ पुरख अकाल नहावण नहाईआ। मिटे दो जहानां हरस, मज़न माघ इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

लोहड़ी कहे इक्क दिन सीता ने मंग लई मंग, राम अग्गे झोली डाहीआ। मैनूं उह लोहड़ी बख्श लोड़ींदे साजण तेरा सदा रहवे संग, सगला संग रखाईआ। भावें दुःख झल्लणे पैण होवां तंग, सोग जगत वाला जणाईआ। पर मेरे अन्तर तेरे प्यार दा निकले छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। बेशक मुख ना उघड़े बोलण ना बत्ती दन्द, अजपा जाप तेरा नाम धिआईआ। मेरे अन्तर निरंतर निज आत्म देणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। इक्को मंग रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं दीन दयाल बख्शंद,

रहमत सच देणी कमाईआ। तेरी याद विच्च खुशीआं वाला साल जाए लघँ, ग़मी नेड़ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

लोहड़ी कहे इक्क दिन कृष्न तों मंगण चल्लया सुदामा, जा के ढोला दिता सुणाईआ। मैनूं लोहड़ी दे दे ओ बंसरी वाल्या काहना, मुकट नैण वाले आपणा नैण बदलाईआ। छेती झोली पा दे आपणा दाना, दात धुर दी इक्क वरताईआ। झट्ट कृष्न ने पकड़ के काना, उहदे हत्थ दिता फड़ाईआ। सुदामे हस्स के किहा एहदा की निशाना, निशानी दे समझाईआ। कृष्न किहा जिस वेले कलिजुग रिहा ना कोई सिआणा, बुद्ध बिबेक ना कोई कराईआ। उस वेले प्रगट होवे कल कलकी मेहरवाना, महिबूब धुरदरगाहीआ। जिस ने नौ सौ चुरानमे चौकड़ी जुग दा लेख लिखाणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे चाईं चाईंआ। उहदे धर्म ग्रन्थां उत्ते इस काने दी कलम दा होए निशाना, पहला अक्खर एसे काने दी कानी नाल बणाईआ। खुशी हो गिआ ब्राह्मण निव निव सीस झुकाणा, नमो नमो सुणाईआ। वाह मेरे त्रैलोकी नाथ भगवाना, तेरी बेपरवाहीआ। मैं ते भुक्खा मंगण आया सां कोई दे देवे अन्न दाणा, तूं भुक्खे दे हत्थ विच्च सड़िआ काना दिता फड़ाईआ। पर मैनूं फेर वी तेरे उत्ते माणा, भरोसा रक्ख के सीस झुकाईआ। जे एस जुग नहीं ते अगले जुग ज़रूर देवेगा खज़ाना, अतोट अतुट्ट वरताईआ। तेरे दर दी मंगी लोहड़ी मेरे अन्तर होई परवाना, परम पुरख मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछलिआं लेखिआं दा लेखा पूर करे जन भगतो तुहाडे नाल लगाया याराना, याराने दी यारी पिच्छेधुर दा प्यार लोड़ींदा सज्जण लोहड़ी वाले दिवस तुहाडी झोली पाईआ।

(२६ पोह शहनशाही सम्मत ७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गिरधारा सिँघ तेरी काली पग्ग, रंग काले नाल सोभा पाईआ। संपूरन होया भगतां जग, जुगती प्रभ ने दित्ती बणाईआ। लेखे लग्गे भट्ठीआं विच्च डाहुण वाले अग्ग, बालण वाले साचे लेखे पाईआ। सचखण्ड दवारे सेवादार सारे जाण भज्ज, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जिन्नां मंडे दित्ते ठप्प, पेड़िआं सेव कमाईआ। सेवा कीती हस्स हस्स, वड्डे छोटे भज्जे वाहो दाहीआ। प्रभ खुशीआं दा माणदे रहे रस, चिन्ता दुःख गवाईआ। लेखे लाउँदे रहे आपणी रुत्त, सरदी विच्च राती जागत आपणी खुशी बणाईआ। सिखिआ लैंदे रहे साची मत, कूड़ विकार गवाईआ। लंगर त्यार कर के लांगरी लैण रक्ख, पाल सिँघ बख्शीश कांशी नाल मिलाईआ। लंगर कहे मेरी सुहञ्जणी हो गई छत्त, छत्तरधार दित्ती वडयाईआ। जिस भगतां रक्खी पत्त, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। उह मुड़ के आया वत्त, बेवतनां लए मिलाईआ। वेखे सभ नूं आपणी अक्ख, अक्खरां वाला समझ सके ना राईआ। जगत

जहान नालों वक्ख, भगत भगवान रीत चलाईआ। भगत भण्डारा जिहड़ा प्रेम विच्च गया पक्क, लोह अगनी तत्त तपाईआ। उह उहनां भगतां लिआ छक, जो शहनशाह भगत दित्ते बणाईआ। नाम रस लै के यक्क, यक्क मुशर्द वेख वखाईआ। झोली उन्हां पिआ हक़, खाली भंडारे दित्ते भराईआ। किरपा करी पुरख समरथ, मेहर नज़र उठाईआ। भावें गिरधारा सिँघ दा विंगा टेडा हत्थ, फेर वी ज़ोर नाल कड़छे दिते हिलाईआ। सज्जे खब्बे हो के रिहा नट्ठ, धौण टेडी रिहा विखाईआ। जदों गुस्से विच्च आवे झट्ट, अक्खां लाल कढ्ढ डराईआ। फेर पट्टां ते मारे हत्थ, मोटा पतला वेख विखाईआ। भट्ठीआं दे इरद गिर्द टप्प, कन्न खुरक के पग्ग लए हिलाईआ। आंढ गवांढ नूं दस्स, सब्जी भाजी रिहा चिराईआ। लोहड़ी कहे मैं लोहड़ा पैणी कहां बोल के वज्ज, वाजा प्रेम वाला वजाईआ। जन भगतां खुशी खुशी होई जब, दरस पाया प्रभ सतिगुर मिल के खुशी बणाईआ। सृष्टी दुनी रसना लाउँदी मदि, कूड़ विकार हलकाईआ। जन भगतां साची मंज़ल पार कर के हद्द, दर घर साचे सोभा पाईआ। जिन्हां नूं लोहड़ी विच्च लोहड़े पैणी वस्त गई लभ्भ, अनमुल्ल दित्ती वरताईआ। हरिजन गुरमुख दर्शन करन रज्ज, अक्खीआं नैण नैण बिघसाईआ। उह वेखो नारद आया भज्ज, बोदी रिहा हिलाईआ। हस्स के कैहंदा जिस वेले मैं गिरधारा सिँघ दा सुरीला सुणिआ छंत, आपणी लई अंगढ़ाईआ। किन्नर यशप अपच्छरां पईआं नच्च, कुद्दण टप्पण थाउँ थाईंआ। इक्क दूजे नूं कहण उह भगत किहो जिहा होवे सच्च, कवण रूप सोभा पाईआ। नारद कहे मैं ताली मार के किहा उहदा रंग काला ते मोटी अक्ख, जगत जहान सोभा पाईआ। पर जदों तुरदा इक्क हत्थ ढाक उत्ते कदे कदे लए रक्ख, बड़ा सोहणा विंगा टेडा नज़री आईआ। मैं उस दा करां की जस, की सिफ्तां नाल मिलाईआ। मेरे नाल चलो कमलीओ मैं तुहानूं देवां दस्स, अक्खां लउ खुल्हाईआ। सारीआं कहण उठो चल्लीए नस्स, भज्जीए वाहो दाहीआ। जे उस दा वड्डा तप, तपीआं सोभा पाईआ। असीं तुहानूं कहीए जे भगता नौं सौ नड़िनवे अपच्छरां सानूं सारीआं नूं लएं रक्ख, लंगर विच्च तेरा हत्थ लईए वटाईआ। वेहलीआं हो के फेर तेरे सिर नूं दईए झस्स, जो बिना वाला तों सोभा पाईआ। फेर तेरी छोटी लत्त नूं बन्न्हीए कस्स, इक्को जिही इक्को रंग नज़री आईआ। जे जिआदा घुट्टयां तैनूं खुशी विच्च पै जाए गश, फेर मुख अमृत दईए चवाईआ। बालण चुक्क के लिआउण किन्नर यशप, गंधरव सेव कमाईआ। सानूं डर लगदा तेरी सूरत वेख के तेरे प्यार विच्च ना जाईए फस, मुहब्बत विच्च तेरे ढोले गाईआ। सच दस्सीए किते गुस्से विच्च आ के सानूं खौंचे ना मारी ठप्प ठप्प, साडीआं पट्टीआं दएं हिलाईआ। जे इक्क वार आखेंगा ते असीं भर भर गुन्न्ह देवांगीआं आटे दे टप्प, फुलके लोहां उत्ते टिकाईआ। तैथों डरदीआं सोहँ दा करांगीआं जप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। पर तूं वी साडे प्यार विच्च पसीने दी थां डोल्ही रत्त, रंग रतड़ा हो के नज़री आईआ। झट्ट नारद बोलिआ थोड़ी मेरी वी खिच दिउ लत्त, नाले बोदी दिउ वधाईआ। मैं वी चरोकणा रिहा सां तक्क, की खेल प्रभू कराईआ। तुसीं इधर वेखो मेरा गिरधारे नालों चंगा नक्क, मेरीआं नासां विच्च वाल नज़र कोई ना आईआ। मेरे मथ्थे विच्च नहीं कोई वट्ट, गिरधारा सिँघ तिउड़ी बल पा के चढ़ाईआ। गिरधारा कहे उह नारद वेख आ मेरीआं भट्ठीआं दी अग्ग बले लट लट, जिथ्थे लाटां वाली सेव कमाईआ। तैनूं पता नहीं मेरा पातशाह दो जहानां किरसाणां ते शब्द धार दा जट्ट, जिस मैनूं दित्ती वडयाईआ।

तुहानूं सारयां नूं खिच्च के कीता इक्ठ, सिर सके ना कोई उठाईआ। जे मेरा दिल कर आया ते मैं सारीआं नूं लऊंगा रक्ख, तैनूं वी एसे जग्ा सेवा विच्च लगाईआ। तूं मेरी मज्झ नूं पाया करीं कक्ख, मैं मुक्छां नूं ताअ दे के बैठां चाईं चाईंआ। नारद किहा एथे सभ दा सांझा हक़, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। मैं वी सेवादार जुग चौकड़ी दा पक्क, पक्की दिआं सुणाईआ। पर मैं तेरे नालों प्रभू दे प्यार विच्च सति, जिस सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग ना कीती कुड़माईआ। पर तूं याद कर लै सतिजुग अहलिआ नूं लाहिआ सथ, पत्थर पाहन दित्ता बणाईआ। जे राम उप्पर चरन ना देंदा रक्ख, उस नूं मिलदी ना माण वडयाईआ। मैं तद दा डरदा नारद कहे कि तेरा साहिब समरथ, दाता बेपरवाहीआ। अज्ज लोहड़ी तूं खुशीआं मिला लै हत्थ, बिन हथेली हत्थ लगाईआ। जे तूं गिआ एं थक्क, मैं अपच्छरां नूं कहां एहनूं घुट्टो चाईं चाईंआ। पर वेखी नौ सौ नड़िनवे कोलों ना जाईं अक्क, अंदरे अंदर आपणा मन डराईआ। नारद कहे पुरख अकाल दीन दयाल दा जगत भंडारा सदा सति, सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए पंचम पंच प्यार दे तत्त, तत्तव तत्त आपणे रंग रंगाईआ।

(गिरधारा सिंघ ने लोहड़ी मंगी २६ पोह श सम्मत ८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

धर्म दी धार कहे लोहड़ी, लुड़ींदे साजण तेरी शरनाईआ। आत्म परमात्म बणाईं जोड़ी, परम पुरख होणा सहाईआ। साचे शब्द दी चाढ़ीं घोड़ी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ । कलिजुग कूड़ी क्रिया वल्लों मोड़ीं, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। जगत विकारे शौह दरयाए रोड़ीं, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जन भगत दोवें हत्थ खलोते जोड़ी, निव निव लागण पाईंआ। कलिजुग जीव करदे बौहड़ी बौहड़ी, नव सत्त रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे सतिगुर शब्द अहिबाबी, मित्र प्यारे देणी वडयाईआ। शाहो भूप सच अदाबी, निव निव सीस झुकाईआ । वसणहारे अगम्म महिराबी, महिबूब तेरी वड वडयाईआ। मेरे दिवस जगत जहान भुन्न खाए कबाबी, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। जगत विकार कीता शराबी, शरअ शरीअत ना कोई वडयाईआ। इशक रिहा ना हकीकी मजाजी, दोवें देण दुहाईआ। पुरख अकाल तूं बेनन्ती सुण साडी, सहज नाल सुणाईआ। तेरी खेल अगम्मड़ी डाहडी, डण्डावत विच्च सीस निवाईआ। तेरा लहणा देणा सच संगीत नाल ढाडी रबाबी, रबाब तन देणी वजाईआ। तेरी धर्म धार इमदादी, मेहरवान होणा आप सहाईआ । तेरा लेखा अगम्म खेल जगत पंज आबी, पंचम धार वड वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

लोहड़ी कहे प्रभू मैं इक्को वस्त मंगदी, दर ठांडे झोली डाहीआ। जन भगतां खेल मुका दे भुक्ख नंग दी, तृष्ना तृखा पूर कराईआ। किसे तोट रहे ना अन्न दी, अतुल्ल भंडार वरताईआ। कल्पणा मेट दे मन दी, मनसा खोज खुजाईआ। आशा पूरी कर दे गोबिन्द चन्न दी, चन्न चानणे तेरे हत्थ वडयाईआ। खेल समझा दे पंज तत्त तन दी, वजूदां महिबूबा परदा लाहीआ। तेरी आवाज इक्को होवे धन्न धन्न दी, धन्न कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सच तेरी सरनाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे सतिगुर प्यारे सज्जणा, दीनां बंधप दीन दयाल। चरन धूड़ करा दे मज़ना, मेरे साहिब बेमिसाल। मेरे नेत्र पा दे अंञना, भूपत भूप हो किरपाल। धर्म दी धार चाढ़ दे रंगणा, रंगत दो जहान बेमिसाल। दर ठांडा इक्को मंगणा, वस्त अगम्मड़ी देणी डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप संभाल।

लोहड़ी कहे प्रभू मेरी वेख लै रैण, लोकमात ध्यान लगाईआ। सच दा दिसे ना कोई साक सैण, साजण रंग ना कोई रंगाईआ। तेरी सृष्टी तेरे नालों होई तरफैण, दुतीआ भाउ रखाईआ। मैं बेनन्ती आई कहण, कह कह रही जणाईआ। जो लेखा लिखया विच्च रमायण, महांभारत नाल वडयाईआ। उहदा लहणा मुकाउणा सुखैण, दर ठांडे खुशी मनाईआ। जन भगतां दर्शन दे दे आपणे नैण, लोचनां कर रुशनाईआ। चरन प्रीती दे दे देण, जो चल आए सरनाईआ। चरन धूढ़ बणा लै रैण, टिक्के ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दिसे ना कोई सैण, साक नज़र कोई ना आईआ।

(२६ पोह शहनशाही सम्मत ६)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दा लउ रुपईआ, रूपा सोना चांदी जगत कम्म किछ ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बणाओ धुर दा सेईआ, मालक मित्र प्यारा एकंकारा संग निभाईआ। साजण मीत इक्क दूजे दे बणो सईआ, सगले संगी बहु रंगी आपणी खुशी बणाईआ। धुर दे राम दी चढ़ो अगम्मी नईआ, नौका सतिगुर शब्द आप वखाईआ। राए धर्म लेखा कढ्ढ ना सके वहीआ, वाअदे सभ दे पूर कराईआ। जिस कारन बुल्ले गाया थईआ, थईआ थईआ कह कह खुशी बणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला तुहाढ्ढा इक्क रमईआ, राम रहीम नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ।

लोहड़ी कहे भगतो धर्म धार दे चब्बो दाणे मक्की, मुकम्मल दिआं दृढ़ाईआ। प्रभू दा प्यार वेखो हक़ी, हकीकत नाल सुणाईआ। जिस दी धार जीव जहान किसे ना तक्की,

जगत नेत्र दर्शन कोई ना पाईआ। उस दे नाल प्रीती जोड़ो पक्की, पारब्रह्म प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। निगाह मार के वेखो अक्खी, बिन नैण नैण उठाईआ। जिस दा लेखा दीगरे बाद यक्की, यक्की इक्को नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दा लउ रस, मिट्ठा इक्को नाम दृढ़ाईआ। हिरदे हरिजू जाए वस, अनडिठड़ा खेल वखाईआ। पन्ध मारना पए ना नस्स नस्स, भज्जण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा लेखा बाहर रव सस, सूर्या चन्द ना कोई चतुराईआ। उह मेटणहार अन्धेरी मस, चन्द चांदना करे रुशनाईआ। सो पुरख अकाला तुहाड्डा गावे जस, सिफ्तां नाल सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ ।

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दी पीवो मदि, मधुर धुन नाम शनवाईआ। सतिगुरू दवार सुहञ्झणी हद्द, हदूदां डेरा ढाहीआ । तुसीं उस प्रभ दी यद, जो यदी आपणा खेल वरताईआ। सच प्रीत विच्च जाओ लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। तुहाढे अंदरों बुझावे अग्ग, अमृत मेघ बरसाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे जग्ग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो आपणी आशा लैणी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। परम पुरख चाढ़ दे रंग, दो जहाना उतर ना जाईआ। निरगुण धार होणा संग, सगले संगी बहु रंगी भेव देणा चुकाईआ। परम पुरख परमात्म तेरा सच दवारा जाईए लंघ, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, देणी सच सच सरनाईआ। आत्म सेज सुहाउणी पलघँ , दर ठांडे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो अज्ज खुशीआं दिवस धरनी वेखो दस्सदी, दह दिशा रही जणाईआ । मस्ती दे विच्च हस्सदी, खुशीआं ढोले गाईआ। पिआसी प्रेम रस दी, चारों कुंट वेख वखाईआ । आपणी बिरहु कहाणी दस्सदी, कूक कूक जणाईआ। मेरे उत्ते धार रही नहीं सच दी, कलिजुग कूड़ कुटंब वधाईआ। मेरी छाती वेखो मच्चदी, अगनी तत्त ना बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप समझाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो सतिगुर शब्द दा लउ प्यार, जोती जाता सिर हत्थ टिकाईआ । मेरा खुशीआं दा विवहार, दिवस रैण ढोले गाईआ। धन्न भाग जे तुहानूं होया दीदार, निरगुण नूर जोत अलाहीआ। तुहाड्डी पैज जाए सवार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो प्रभ दीआं लोड़ां, लुड़ींदा साजण दए वडयाईआ। आदि जुगादि भगत भगवान दा जोड़ा, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। जन भगतां प्रभ सदा होवे बौहड़ा, बांहो फड़ फड़ बाहर कढ्ढाईआ। तुहाढ्ढा अन्तर रहे ना कौड़ा, सतिगुर मिट्ठा रस दए पिआईआ। जिस दा शब्द अगम्मी घोड़ा, जगत नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। उस दी सदा सदा सद लोड़ा, लुड़ींदा सज्जण धुरदरगाहीआ। जिस सस्से उप्पर ला के होड़ा, हँ ब्रह्म दिती वडयाईआ। जिस दा वक्त अग्गे थोड़ा, बहुती वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रेम दा बखशणहारा घोड़ा, बिन रासां चार कुंट दुड़ाईआ। (३० पोह शहनशाही सम्मत १०)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳

✳ ✳ ✳ ✳ ✳

जन भगतां सदा लोहड़ी, लुड़ींदा साजण दए वडयाईआ। चरन प्रीती बख्शे गुड़ दी रोड़ी, बिन रसना रस चखाईआ। शब्दी धार चढ़ा के घोड़ी, वागाँ आपणे हत्थ रखाईआ। भगत भगवान बणा के जोड़ी, सोहणा धुर दा रंग रंगाईआ। जगत विकारा अंदरों होड़ी, होड़ा सस्से वाला दए वखाईआ। मन मनसा आपणे वल्ल मोड़ी, मेल मिलाए सहज सुभाईआ। जन भगतां जुग जुग वस्त एह दिती थोड़ी, थोड़ा थोड़ा रस झोली पाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त आप गया बौहड़ी, आप आपणी दया कमाईआ। विकार मध अन्तर रहण ना देवे कौड़ी, रस अमृत नाम भराईआ। पार करा दे भीड़ी गली सौड़ी, मार्ग इक्को इक्क वखाईआ। रागाँ विच्चों राग उपजिआ गौड़ी, लोहड़ी दे दिन दी एहो वड्डी वडयाईआ। नानक धार जो शब्द जणाया पौड़ी, एसे दिवस कीती सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ।

लोहड़ी कहे मैं जुग जुग लोड़दी, आशा आपणे अंदर रखाईआ। भगत भगवान नाल जोड़दी, जुग जुग दी रीती चली आईआ। मेरा दिवस उह जिस विच्च सभ तों पहलां पूजा होई बोहड़ दी, पिप्पलां सीस निवाईआ। यगै पुरुष दी धार हावगरीव दे मोड़दी, परदा परदिआं विच्चों खुल्लाईआ। बावन दी धार जिस दी खेल ब्रह्मण गौड़ दी, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। मेरी आदि जुगादी धार सदा दौड़दी, भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा दिवस दिहाढ़ा उह जिस विच्च पूजा चल्ली पहली वार तलाब जौहड़ दी, जल धारा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ।

लोहड़ी कहे मैं जुग जुग लोड़दी साजण, सजणूआं धुरदरगाहीआ। जो दो जहानां राजन, शाहो भूप नूर अलाहीआ। मेरा दिवस उह जिस विच्च जगत दा लहणा देणा देणा लहणा बणया नाल महाजन, जगत हट्टां खेल खिलाईआ। मेरे दिवस पहली वार कपल मुन मारी अवाजन, खुशीआं नाल सुणाईआ। सांख योग दस्सया आपणी मातन, रीती दीन दुनी बदलाईआ। मेरे दिवस जगत दन्दासा शुरु होया सी दातन, कुदरत दे

रंग नूं जगत रंग विच्च बदलाईआ। मेरे दिवस विच्च मत्सय जल धार कीता उद्घाटन, मच्छ कच्छ संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे दिवस भगतां भगवान नाल मिल्या मेल, मेला हरि जगदीश कराईआ। दीन दुनी नूं कल्पणा दा चढ़या तेल, हउमे हंगता संग रखाईआ। प्यार तुटिआ सज्जण सुहेल, साचा संग ना कोई बणाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतां दी प्रभ दे प्यार विच्च वधी वेल, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे दिवस रिड़किआ गिआ सागर, सगली सृष्ट जणाईआ। अमृत भरया गया अगम्मी गागर, जिस नूं वेखण कोई ना पाईआ। वणजारे बणाए धर्म सौदागर, सोहणी वस्त वखाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, देवे माण माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

लोहड़ी कहे समुंद सागर लेखा मुकाया अद्ध, हिसा वंड आपणे हत्थ रखाईआ। इक्क पासे अमृत ते इक्क पासे मदि, वेखणहारा बेपरवाहीआ। राक्षस देवत दोवें लए सद्द, प्रेम नाल बुलाईआ। दोवें इक्क दूजे नालों अग्गे बहिण वध, आपणी खुशी वखाईआ। लोहड़ी कहे मेरा दिवस सुहावणा जिस विच्च कलस जग राक्ष मदि विच्च लपटाईआ। दोहां दी धार दिती वंड, प्रभ आपणी खेल वखाईआ। जिस दे हुक्म विच्च जुग चौकड़ी रहे हंढ, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतां मिले दीन दयाला, अमृत रस चखाईआ। रांक्षसां मिले मदि प्याला, मिट्टी खाक सिर विच्च छाहीआ। सरगुण दी धार निरगुण दा खेल खेल निराला, दोवें रंग मेरे दिवस विच्च रखाईआ। मैं ग़मी खुशी दोहां विच्च होई बेहाला, आप आपणा गई भुलाईआ। परम पुरख परमात्म आपणा खेल कीता भगतां मार्ग दे सुखाला, सच रंग रंगाईआ। मूरख मुगध कर बेहाला, जगत वासना विच्च हलकाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो तुहाढे धन्नभाग जिन्हां अन्तर प्रभू प्रेम दी माला, जगत मणके फेरन दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाढा घर गृह मन्दर सरीर प्रभू दी धर्मसाला, दवारा साचा सोभा पाईआ। लोहड़ी कहे लुड़ींदा साजण मिल्या घर गोपाला, गोबिन्द मेला सैहज सुभाईआ। मेरा निक्का जिहा अहिवाला, अहिल नाल दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जो वेखणहारा शाह कंगाला, पातशाह आपणा रंग रंगाईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत ११)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ ❊ ❊ ❊ ❊